आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
विद्यावार्ता™

Rayat Shikshan Sanstha's

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)

One Day National Interdisciplinary Conference

On

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

Saturday, 4th January, 2020

Organized by

Department of English, Hindi, Marathi, Economics, History, Commerce and IQAC

Date of Publication
04 Jan. 2020

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 6.021 iijif FACTOR

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

"डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के भूमि की ओर' नाटक में चित्रित सामाजिक संवेदना"

प्रा. नीता पोपट साठे
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभागराजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर

डॉ सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' हिंदी नाटय साहित्य के एक प्रख्यात प्रयोगधर्मी नाटककार है | उन्होंने ज्यादातर परिवेश प्रधान नाटक लिखे है | साथ ही आज के हिंदी नाटक को उच्चतम एवं सर्वव्यापक परिवेश प्रदान करने का काम किया है | डॉ. चन्द्र जी के नाटकों का विषय सामजिक ऐतिहासिक या पौराणिक कोई भी क्यों न हो, लेकिन उन्होंने उसे यथार्थवादी स्वरूप प्रदान करने का सफल प्रयास किया है |

'भूमि की ओर' डॉ.चन्द्र जी का सं 1976 ई. में प्रकाशित सामाजिक समस्या पर आधारित नाटक है | इसमें ग्रामीण परिवेश की समस्याओं ग्राम विकास की संभावनाओं का यथार्थ चित्रण किया है | प्रस्तुत नाटक की प्रमुख नायिका पौर्णिमा के माध्यम से सामाजिकता बोध या सामाजिक संवेदना को प्रस्तुत किया है |

वीरेंद्र प्रकाश शर्मा के अनुसार सामाजिक का अर्थ है, "वो जीव जो परस्पर समाजिक अंतर्क्रिया करते है, समूह में साथ साथ रहते है, समाजप्रिय, आश्रित एवं सहकारी है, समूह के कल्याण एवं हितों के प्रति जागरुक है, सामजिक कहलाते है |" (वीरेंद्र प्रकाश शर्मा – समाजशास्त्र विश्वकोश, जयपुर, पंचशील प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ क्र. 242) हिंदी विश्वकोश खण्ड 23 के अनुसार संवेदना का अर्थ है, "अनुभव करना सुख-दुख आदि की प्रतीति करना |" (हिंदी विश्वकोश खण्ड 23 – नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ क्र. 428) इससे यह स्पष्ट है की, समाजहित के प्रति जागरूक संवेदनशील व्यक्ति ही समाज में स्थित समस्याएँ दुःख दूर करके समाज का कल्याण कर सकता है |

प्रस्तुत नाटक के केंद्रीय चरित्र पूर्णिमा के माध्यम से सामाजिक संवेदना का विचार एवं कार्य को प्रस्तुत किया है | नाटक नायिका पूर्णिमा कृषि में एम. एस. सी. है | उसकी आयु लगभग 25 वर्ष है | वह अपनी पढाई का उपयोग देहात की सेवा के लिए करना चाहती है | अपनी थोड़ी सी शिक्षा के बल पर शहर में डेढ़ सौ रुपये वेतन की नौकरी करनेवाले अपने जीजा जगदीश को गाँव जाकर खेती करने की सलाह देती है | जगदीश शहरी चकाचौंध की ओर आकर्षित होकर मेहनत से जी चुराकर थोड़े से पैसे के लिए शहर में आ बैठा है; लेकिन वहां भी वह सुख-शांति से नहीं रह पाता है | उसने अपनी बीवी और सात बच्चों को गाँव में अपने भाई कैलाश के सहारे छोड़ा है | देहात छोड़कर आर्थिक विवशता का शिकार बने अपने जीजा को गाँव की उपयोगिता और गाँव के विकास में शिक्षित वर्ग के योगदान को स्पष्ट करते हुए वह कहती है – "जो शिक्षित वर्ग यहाँ महत्त्वहीन है, वही देहात के लिए वरदान हो सकता है, उपज का स्त्रोत बन सकता है |" और "शिक्षित वर्ग ..... वह जमीन भी सुधार सकता है और वहाँ के कुटीर उद्योगों को भी बढ़ावा दे सकता है | साथ ही वह के लोगों को जमीन के उचित बटवारे के लिए प्रेरित भी कर सकता है |" (डॉ.सुरेश शुक्ल 'चन्द्र –भूमि की ओर, इडा प्रकाशन, 257/1, बाबू पुरवा कॉलोनी, कानपूर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ क्र. 31)

स्पष्ट है की पूर्णिमा गाँव के विकास का स्त्रोत शिक्षित वर्ग है , ऐसा मानती है | उसके जो कुछ पढ़ा है उसके कार्यात्मक पहलु को साकार करना चाहती है | लेकिन उसके इस प्रयास के लिए गाँव का वातावरण बिलकुल भी अनुकूल नहीं है | जातिगत भेदभाव, एक–दूसरे से ईर्ष्या, भाईयों में आपसी मन–मुटाव, टुकड़ों में बँटी खेती, ऊँच–नीचता की भावना ने सारे गाँव को जखड रखा है | पूर्णिमा की बहन उमा का कथन इस बात की पुष्टि करता है ....." यहाँ तो ईर्ष्यावश खलिहानों में आग लगा देते है | रात में जानवर छोड़कर दूसरों के खेत चरा

लेते है | लड़ाई-झगड़े तो छोटी –छोटी बात पर होते है, कत्ल की भी एक घटना आये दिन हुआ करती है |" (डॉ.सुरेश शुक्ल 'चन्द्र –भूमि की ओर, इडा प्रकाशन, 257/1, बाबू पुरवा कॉलोनी, कानपूर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ क्र. 59)

ऐसी प्रतिकूल परिस्थिती में भी पूर्णिमा गाँव को सुधारने की हिम्मत रखती है , उसकी यह हिम्मत इस बात से स्पष्ट होती है, "मै कुछ भी कठिन नहीं मानती | जब वे अपना हित देखेंगे, तो स्वयं ही मेरी बातों पर ध्यान देंगे | देखिएगा थोड़े ही दीनों में मै इस गाँव की काया पलट दूँगी | इसे एक आदर्श गाँव बना दूंगी |"(डॉ.सुरेश शुक्ल 'चन्द्र – भूमि की ओर, इडा प्रकाशन, 257/1, बाबू पुरवा कॉलोनी, कानपूर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ क्र. 56)

इससे यह स्पष्ट होता है की, गाँव की गंभीर स्थिति से संघर्ष करने की क्षमता पौर्णिमा में है | अपनी शिक्षा का उपयोग करके गाँव के लोगों को आधुनिक पद्धती से खेती करना सिखाती है | लोगों में एकता निर्माण करती है | सहकारिता के आधार पर प्राथमिक उपभोक्ता भंडार, एक खादी आश्रम, महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, सहकारी विक्रय समिति, कुटिर उद्योग की स्थापना कर पिछडे हुए गाँव में शहर जैसी सारी सुविधाएँ उपलब्ध कराती है | इन सारे बदलाव के कारण गाँव को आदर्श ग्राम पुरस्कार प्राप्त होता है | अंत में उच्च शिक्षित पूर्णिमा निरक्षर कैलास से शादी करके सारे गाँव के सामने एक आदर्श रखती है | पूर्णिमा के इस कार्य सफलता के लिए डॉ. लवकुमार लवलीन जी का कथन दृष्टव्य है, "शिक्षित युवा-वर्ग ही गाँव और समाज से जुड़कर उसके अन्दर की समस्याओं और विसंगतियों अव्यवस्थाओ तथा जटिलताओं को अपने स्वछंद विचारो एव कार्यों से व्यवस्थित और संतुलित कर सकते है और एक आदर्श समाज की स्थापना में अपनी भूमिका साबित कर सकते है |" (डॉ. लवकुमार लवलीन – डॉ.सुरेश शुक्ल चन्द्र की रंगयात्रा, विकास प्रकाशन कानपुर, 311 सी विश्व बैंक बर्रा, कानपुर 208027, प्रथम संस्करण 2012 , पृष्ठ क्र. 105-106)

पौर्णिमा ने अपनी शिक्षा, प्रतिभा और मेहनत से गाँव की गरीबी और अज्ञानता को दूर कर दिया है |

निष्कर्षत:अज्ञान और अशिक्षा के कारण गाँव तथा देहात अविकसित है, लेकिन सामाजिक संवेदना की जागृती से ग्रामीण विकास के लिए शिक्षित वर्ग की भूमिका महत्त्वपूर्ण है | शिक्षित युवाशक्ति की मदत से ही ग्रामविकास संभव है | वर्तमान युवा पीढ़ी भौतिक साधनों के आकर्षण के कारण महानगरीय जीवन अपनाती है लेकिन अर्थाभाव से तनावमुक्त रहती है | नए विचारों की युवा पीढ़ी एवं बुद्धिजीवी वर्ग ने गाँव के विकास की दृष्टिकोण से ग्रामासुधर को पूरा किया तो तमाम भारतीय गांवो की तस्वीर बदल जाएगी |